

विचार बिन्दु

आयु में आनंद है, समग्र शरीर के मंगल में, स्वास्थ्य में आनंद है। इसी आनंद का भाग करने पर दो वस्तुएं प्राप्त होती हैं, एक ज्ञान एवं दूसरा प्रेम।
—टैगोर

व्याधिक्षमत्व क्या है?

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। भगवान आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया: भगवन! देखने में आता है कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है। आत्रेय का उत्तर था:— अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के तमाम कारण, जैसे ऋतुओं का विपरीत होना, प्रज्ञापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतियोग, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वाला जगह, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार गुरन्त हानि नहीं पहुंचा पाते। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थाणि भवन्ति। च.सू.28.7)। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या ज्यादा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वही दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुंचा हुआ, शरीर के प्राणायतनों में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कष्टदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर की बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्त्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्षणों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियाँ भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती हैं।

अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि क्यों कुछ लोग प्रायः कभी बीमार नहीं पड़ते। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें जीवन के अंतिम दिन तक लगभग सभी क्लिनिकल पैरामीटरस सामान्य बने रहते हैं। जैसा कि आपने पूर्व में पढ़ा, वस्तुतः इस चमत्कार के पीछे कोई चमत्कार नहीं बल्कि व्याधिक्षमत्व है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक व्याधिक्षमत्व सिद्धांत-प्रिंसिपल ऑफ़ इम्यूनिटी के जनक माने जाते हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेट्राइड्ड) व्याधिक्षमत्व मज़बूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्त्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सहज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुस्तर् मांसपेशियों, संरचना, स्वरूप व मजबूत इन्द्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूख, प्यास, ठंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सम अग्नि वाला, बुढ़ापे की उम्र में ही बुढ़ा होने वाला, मांसपेशियों के सही चय वाला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.18) : सममांसप्रमाणस्तुसमसंहननोनः। दृढेन्द्रियोविकाराणां न बलेनाभिभूयते॥ क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः। समपक्तासमजः सममांसचयोमतः॥

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्युनिटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र संक्रमण, बीमारी या अन्य अवांछित तत्वों के आक्रमण से बचने के लिये शरीर को सुरक्षा प्रदान करता है। किसी व्यक्ति में व्याधिक्षमत्व में कमी होने से शरीर इम्यूनो-कॉम्प्रोमाइड्ड स्थिति में आ जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने सेरोगजनन आसानी से होता है। इम्युनिटी किसी व्यक्ति के शरीर में विशिष्ट एन्टीबॉडी या श्वेत रक्त कौशिकाओं की क्रिया से किसी विशेष संक्रमण, विषाक्त पदार्थ या हानिकारी जीवन-शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

व्याधिक्षमत्व को परिभाषित करते हुये चरकसंहिता के दिग्गज टीकाकार आचार्य चक्रपाणि ने लगभग 900 साल पहले लिखा (च.सू. 28.7 पर चक्रपाणि): व्याधिक्षमत्वं व्याधिबलविरोधित्वं व्याध्युत्पादप्रतिबन्धकत्वमिति यावत्॥ तात्पर्य यह है कि व्याधिबल की विरोधिता व व्याधि की उत्पत्ति में प्रतिबंधक होना व्याधिक्षमत्व है। अधिप्राय यह है कि शरीर में उत्पन्न बीमारी केबल या तीक्ष्णता को रोकने और बीमारी की उत्पत्ति को रोकने वाली क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है।

व्याधिक्षमत्व को बल, ओज और प्राकृत श्लेष्मा के रूप में भी जाना जाता है। बल वह शक्ति है जिसके द्वारा शरीर विभिन्न चेष्टाओं से कार्य संपन्न करता है। इस कार्योंपादक शक्ति को व्यायाम-शक्ति से जाना देखा जाता है। बल के तीन प्रकार हैं (च.सू.11.36) : त्रिविधंबलमिति- सहजं, कालंज, युक्तिकृतं च। सहजयंच्छरीरस्सत्त्वोः प्राकृतं, कालकृतमृतुविभागजंवयः कृतं च, युक्तिकृतंपरुस्सद्यदाहारचेष्टायोगमम्। बल तीन प्रकार के होते हैं। सहज बल शरीर और मन पर आधारित होता है। उम्र के साथ शरीर की वृद्धि से प्राप्त बल को कालज बल कहा जाता है। खान-पान, जीवन-शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है। व्याधिक्षमत्व को ओज और ओज को बल के रूप में भी समझा जाता है (सु.सू.15.19) रसादीनांशुक्रान्तानांधातुानांयत्परंतजस्तत्स्त्र्ल्बोजस्तदेवबलमित्युच्यतेस्वशास्त्रसिद्धान्तात्॥ रसादिक तथा शुक्रान्त धातुओं के उच्छृङ्ख सार भाग को ओज कहते हैं तथा आयुर्वेद के अनुसार उसी का दूसरा नाम बल है। यही बल व्याधियों से शरीर की रक्षा करता है। यहाँ एक बात समझना आवश्यक है ओज और बल हालाँकि एक कहे गये हैं किन्तु ओज को कारण और बल को कार्य माना जाता है। ओज का रूप, रस और वर्ण होने से द्रव्य है जबकि बल इसका कार्य है। यहाँ व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में बल (कार्य) और कारण (ओज) को एक मान लिया जाता है। इसी सन्दर्भ में प्राकृत कफ को बल या व्याधिक्षमत्व का कारण माना जाता है (च.सू.17.117) : प्राकृतस्तुबलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते॥ स चैवौजः स्मृतः काये स च पाप्मोविदश्रते॥ यही कारण है कि कफज प्रकृति में उत्तम बल, पित्तज प्रकृति के व्यक्तियों में मध्यम बल तथा वातज प्रकृति के व्यक्तियों में अवर बल होता है।

इस प्रकार व्याधिक्षमत्व का तात्पर्य व्याधि-बल का विरोध शरीरगत बल द्वारा किया जाता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न भावों को दशविधि रोगी परीक्षा के भावों में भी देखा जाता है। उदाहरण के लिये व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सम प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गयी है, बल का मुख्य कारक ओज है जो सभी धातुओं का सार है। साररूप में यह सभी धातुओं में व्याप्त होकर धातुओं की रक्षा करता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले अन्य भावों में सात्त्व्य, सत्त्व, अग्नि, शारीरिक-शक्ति व वय है। अग्निबल को आहार करने की क्षमता से परखा जा सकता है। आहार-शक्ति (आहार की मात्रा) अग्निबल पर आश्रित है। यदि व्यक्ति की आहार शक्ति मजबूत है तो भोजन का पाचन और धातुओं की पुष्टि यथोचित होने से शरीर मज़बूत रहता है। व्यायाम-शक्ति या शारीरिक रूप से श्रम करने की शक्ति भी बल का संकेतक है। व्यक्ति की वय या उम्र का भी बल से संबंध होता है। युवावस्था में उत्तम बल और जरा या बुढ़ापा आने पर बल कम रहता है।

व्याधिक्षमत्व का रोगों से बचाव और उपचार में अनिवार्यता को देखते हुये यह प्रश्न स्वाभाविक है कि व्याधिक्षमत्व को बढ़ाने के लिये कौन सी युक्ति का क्रियान्वयन किया जाये? व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये बल व ओज की वृद्धि में सहायक द्रव्यों और क्रियाओं का इस प्रकार युक्तिपूर्वक नियमित सेवन करना चाहिये, जिससे व्याधिक्षमत्व का संरक्षण व वृद्धि हो किन्तु प्रकृति, अग्नि, धातुओं वमलक्रिया का समत्व तथा आत्मा, इन्द्रियों व मन की प्रसन्नता यथावत बनी रहे। यह विषय इतना विस्तृत है कि पूरा आयुर्वेद इसमें समाहित है। तथापि संक्षेप में व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये सात रक्षा-दीवारों की नितर और सम्यक सार-सम्हाल करना आवश्यक है। इनमें (1) आहार या खानपान, (2) विहार या जीवनशैली, (3) स्वस्थवृत्त या व्यक्तित्ता स्वास्थ्य विषयक क्रियायें, (4) सद्बृत्त या व्यक्तिगत सदाचरण, (5) पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें, (6) रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय, और अंततः (7) औषधि या चिकित्सा शास्मिल है।

—अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय, (भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और ‘सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत’ से प्रेरित हैं)

जब शिक्षण संस्थानों में शिक्षक ही नहीं, तो भाषा की नीतियों का हम क्या करेंगे?



प्रोफेसर अशोक कुमार

आज 21वीं सदी के भारत में जब हम एक वैश्विक महाशक्ति बनने का दावा करते हैं, तब हमारी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को देखकर एक अत्यंत चिंताजनक तस्वीर सामने आती है। वर्तमान में शिक्षा का वास्तविक स्वरूप अकादमिक उत्कृष्टता, कौशल विकास या अनुसंधान आधारित न होकर, केवल वैचारिक प्रतीकों, भाषाई विवादों और राजनीतिक एजेंडों का एक साधन बनकर रह गया है। यह एक ऐसा विचारणीय प्रश्न है जिस पर राष्ट्रव्यापी आत्ममंथन की आवश्यकता है। हम इस बहस में तो पूरी ऊर्जा लगा रहे हैं कि स्कूलों में कितनी भाषाएँ पढ़ाई जाएँ, कौन सा राष्ट्रगान या राष्ट्रगीत पहले गाया जाए, और पाठ्यक्रम में किस विचारधारा को स्थान मिले, लेकिन हम उस बुनियादी सच से आँखें मूंद बैठे हैं कि क्या स्कूलों में बच्चे और शिक्षक मौजूद भी हैं या नहीं?

भाषाई और वैचारिक विवादों का मुखौटा :—अस्सर देखा जाता है कि देश के विभिन्न राज्यों में शिक्षा को लेकर होने वाली अधिकांश चर्चाएँ भाषाओं की संख्या पर केंद्रित होती हैं। कोई राज्य दो भाषाओं (हिंभाषा सूत्र) की वकालत करता है, तो कोई तीन भाषाओं (त्रिभाषा सूत्र) की हद तो तब हो जाती है जब प्रशासनिक और राजनीतिक स्तर पर बिना किसी व्यावहारिक समझ के एक प्रदेश की भाषा को दूसरे प्रदेश पर थोपने का प्रयास किया जाता है—जैसे राजस्थान में मराठी अनिवार्य करने की अव्यावहारिक महत्वाकांक्षा। केरल जैसे राज्य अपने भाषाई और क्षेत्रीय गणित के अनुसार अलग रख अपनाते हैं।

इसके साथ ही, स्कूलों में कौन सा गीत गाया जाएगा, प्रार्थना क्या होगी, और संस्कृत को अनिवार्य कैसे बनाया जाए, इन प्रतीकात्मक मुद्दों पर घंटों बहस होती है। निःसंदेह, अपनी संस्कृति, संस्कृत भाषा और राष्ट्रगीत के प्रति सम्मान आवश्यक है, लेकिन यह सम्मान तब तक बेमानी है जब तक हमारे बच्चे बुनियादी साक्षरता और ज्ञान से वंचित हैं। इन वैचारिक बहसों की ओर भाषा और पाठ्यक्रम के बड़े-बड़े सिद्धांतों की बातें करना केवल बेमानी लगता है।

जमीनी हकीकत : गायब छात्र और ड्राॅपआउट का भयावह सच :—जब हम शिक्षा के वास्तविक आंकड़ों और जमीनी हकीकत पर नज़र डालते हैं, तो स्थिति बेहद डरावनी दिखाई देती है। देश के कई राज्यों में यह देखा गया है कि कक्षा 10वीं पास करने के बाद लगभग 40 से 45 प्रतिशत छात्र 12वीं कक्षा तक पहुँच ही नहीं पाते। यह विशाल ड्राॅपआउट रेट यह दर्शाता है कि हमारी माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था छात्रों को रोके रखने में पूरी तरह विफल रही है।

आर्थिक तंगी, स्कूलों की दूरी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण का अभाव और भविष्य के प्रति असुरक्षा के कारण लाखों बच्चे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। लेकिन विडंबना देखिए, किसी भी राजनीतिक दल या नीतिगत बहस में इस 45 प्रतिशत गायब हो जाने वाली युवा पीढ़ी पर कोई गंभीर चिंता या विश्लेषण देखने को नहीं मिलता।

एकल शिक्षक और शून्य छात्र वाले स्कूलों का विरोधाभास :—देश के इंफ्रास्ट्रक्चर का इससे बड़ा मजाक क्या हो सकता है कि आज भी हजारों स्कूल ऐसे हैं जो एकल शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं। एक ही शिक्षक पहले से पाँचवीं कक्षा तक के बच्चों को एक साथ बैठाकर पढ़ा रहा है। वह मध्याह्न भोजन की व्यवस्था संभाले, प्रशासनिक कागजी कार्रवाई करे, या बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दे?

दूसरी तरफ एक और विरोधाभासी स्थिति है—कई स्कूल ऐसे हैं जहाँ कागज़ों पर शिक्षक तेनात हैं, वेतन उठ रहा है, लेकिन स्कूल में एक भी छात्र नामांकित नहीं है। यह प्रशासनिक अदृढ़दर्शिता और संसाधनों के घोर कुप्रबंधन का जीवंत उदाहरण है। जब व्यवस्था इतनी बुनियादी स्तर पर चरमराई हुई हो, तो वहाँ भाषा और पाठ्यक्रम के बड़े-बड़े सिद्धांतों की बातें करना केवल बेमानी लगता है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और प्रशिक्षित शिक्षकों का घोर अभाव :—एक आदर्श शिक्षा व्यवस्था के लिए तीन चीजें अनिवार्य हैं: उपयुक्त बुनियादी ढांचा (इंफ्रास्ट्रक्चर), योग्य व प्रशिक्षित शिक्षक और पढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण। आज हमारे हजारों ग्रामीण और अर्ध-शहरी स्कूलों में पीने का साफ पानी, छात्र-छात्राओं के लिए अलग शौचालय, ब्लैकबोर्ड, प्रयोगशालाएँ और कंप्यूटर जैसी बुनियादी सुविधाएँ तक नहीं हैं।

इससे भी बड़ा संकट शिक्षकों की गुणवत्ता का है। क्या हमारे शिक्षक आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में प्रशिक्षित हैं? क्या उन्हें गैर-शैक्षणिक कार्यों (जैसे चुनाव ड्यूटी, जनगणना, राशन प्रबंधन) से मुक्ति मिली है ताकि वे केवल पढ़ाने पर ध्यान दे सकें? जवाब नकारात्मक है। जब बातचीत और विश्लेषण के केंद्र में

निष्कर्ष और समाधान का मार्ग :—भारत में शिक्षा का वर्तमान स्वरूप अत्यंत चिंताजनक और आत्मघाती मार्ग पर है। यदि हमें सचमुच जनसांख्यिकीय लाभार्शका लाभ उठाना है और देश के भविष्य को सुरक्षित करना है, तो हमें शिक्षा को राजनीति के चंगुल से मुक्त करना होगा।

अब समय आ गया है कि:—

- बजट और प्राथमिकताएँ बदलें: विज्ञापनों और प्रतीकात्मक बहसों के बजाय सरकारी बजट का एक बड़ा हिस्सा स्कूलों के भौतिक बुनियादी ढांचे को सुधारने और आधुनिक प्रयोगशालाएँ बनाने में लगे।

- शिक्षकों की क्वालिटी और सम्मान: हजारों रिक्त पदों पर तत्काल नियमित और प्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती हो। उन्हें गैर-शैक्षणिक कार्यों से पूरी तरह मुक्त किया जाए।

- ड्राॅपआउट पर ऑडिट: कक्षा 10वीं के बाद पढ़ाई छोड़ने वाले 40–45 प्रतिशत बच्चों के कारणों का ज़िला स्तर पर विश्लेषण हो और उन्हें कौशल विकास से जोड़ा जाए।

- नीतिगत स्थिरता: शिक्षा नीतियों को दलीय राजनीति से ऊपर उठकर एक राष्ट्रीय सहमति के तहत दीर्घकालिक रूप से लागू किया जाना चाहिए।

जब तक हम इन बुनियादी वास्तविकताओं पर बातचीत, विश्लेषण और ठोस कार्रवाई नहीं करेंगे, तब तक भाषाओं और प्रतीकों की यह बहस केवल एक खोखली राजनीतिक औपचारिकता बनकर रह जाएगी। देश को साक्षर और सशक्त बनाने के लिए हमें सबसे पहले स्कूल, शिक्षक और छात्र को बचाना होगा।

—**प्रोफेसर अशोक कुमार, पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय**

भीलवाड़ा में “गौ सम्मान आव्हान अभियान” को मिल रहा व्यापक जनसमर्थन

■ **अभियान के तहत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जनसंपर्क कर अधिक से अधिक लोगों को हस्ताक्षर अभियान से जोड़ा जा रहा है**

गोवर्धन वैष्णव, रोशन सुवालका, धीसू पुरी, मुकेश जोशी, कृष्ण गोपाल ब्रह्मभट्ट, हेमंत चंदनानी, राकेश सुवालका, गुमान सिंह, मिड्डलाल सेन, रोहित शर्मा एवं बनवारी लाल मेवाड़ा आदि मौजूद थे। जिले के सभी स्थानों पर ग्रामीणों, गौसेवकों एवं गौशाला समितियों ने अभियान का समर्थन करते हुए अपने-अपने गांव, गांव एवं मोहल्लों में व्यापक स्तर पर हस्ताक्षर अभियान चलाने तथा अधिकांशक लोगों को जोड़ने का भरोसा दिलाया। अभियान से जुड़े जिले के सभी गौ भक्तों एवं नागरिकों से आग्रह किया है कि वे अपने क्षेत्र के लिए हस्ताक्षर चत्र प्राप्त कर अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर करवाकर इस अभियान में सक्रिय

अब बिना एफएसएसएआई लाइसेंस नहीं बनेगा शादी-ब्याह, धार्मिक कार्यक्रम का खाना

■ **सुंझुनूं में स्वास्थ्य विभाग की सख्ती, बिना पंजीकरण हलवाई-कैटरर्स पर होगी कार्रवाई, आयोजकों को भी जिम्मेदारी निभानी होगी**

■ **नई व्यवस्था के तहत अब शादी, धार्मिक अनुष्ठान, सामाजिक भोज और अन्य बड़े आयोजनों के आयोजकों को कार्यक्रम से पूर्व खाद्य सुरक्षा विभाग को सूचना देनी होगी**

भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा मानकों की जांच करेंगे। यदि मौके पर नियमों का उल्लंघन पाया गया तो संबंधित कैटरर के साथ-साथ आयोजकों के विरुद्ध भी निरमानुसार कार्रवाई की जा सकती है। स्वास्थ्य विभाग जल्द ही जिलेभर में विशेष वेरिफिकेशन ड्राइव शुरू करेगा। अभियान के दौरान सभी हलवाइयों, वेंडर और कैटरिंग व्यवसायियों के लाइसेंस, पंजीकरण एवं अन्य आवश्यक दस्तावेजों की जांच की जाएगी। बिना लाइसेंस संचालन करने वाले तथा खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन नहीं करने वालों को चिन्हित कर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

सुंझुनूं, (निर्स)। शादी-विवाह, मेले, धार्मिक आयोजनों और सार्वजनिक भोज में परोसे जाने वाले भोजन की गुणवत्ता और आमजन के स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने जिले में बड़ी पहल की है। अब भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) का वैध लाइसेंस या पंजीकरण नहीं होने पर कोई भी हलवाई, वेंडर या कैटरिंग व्यवसायी भोजन तैयार नहीं कर सकेगा। नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम- 2006 के तहत सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इसके साथ ही आयोजनकर्ताओं की जिम्मेदारी भी तय कर दी गई है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय की ओर से जारी

मेघ घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

मिथुन घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

कर्क परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुनये मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

सिंह आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यक्तिगत परेशनियाँ अभी बनी रहेंगी।

कन्या आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

तुला आवश्यक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। मानसिक तनाव बना रहेगा। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बन्ने लगेगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

धनु अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बन्ने लगेगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है।

मकर परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। शुभ कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।

कुंभ चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता अभी बनी रहेगी। आज बन्ते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मीन परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान में चल रही परेशानी दूर हो सकती है।